

अप्पमत्तो (४) । उवरि छ अंतोमुहुत्ता । एवमड्वस्सेहि दसअंतोमुहुत्तेहि ऊणिया चक्षुदंसणिडिदी अप्पमत्तुक्कस्संतरं होदि ।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, गाणाजीवं पडुच्च ओघं^१ ॥२८९॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं^२ ॥२९०॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण बे सागरोवमसहस्साणि देसूणाणि^३ ॥२९१॥

तं जहा-एक्को अचक्षुदंसणिडिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो । गढभादिअड्वस्सेण उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं^४ च जुगवं पडिवण्णो (१) । अंतोमुहुत्तेण वेदगसम्मत्तं गदो (२) । तदो अंतोमुहुत्तेण अणंताणुबंधिं विसंजोजिदो (३) । दंसणमोहणीयमुवसामिय (४) पमत्तापमत्त-परावत्तसहस्सं कादूण (५) उवसमसेडीपाओग्गअप्पमत्तो जादो (६) । अपुव्वो (७) । अणियट्ठि

हुआ । पुनः प्रमत्तसंयतं हो (३) अप्रमत्तसंयतं हुआ (४) । इनमें ऊपरके छह अन्तर्मुहूर्त और मिलाये । इस प्रकार आठ वर्ष और दश अन्तर्मुहूर्तोंसे कम चक्षुदर्शनीकी स्थिति ही चक्षुदर्शनी अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

चक्षुदर्शनी चारों उपशामकोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ओघके समान है ॥२८९॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२९०॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम दो हजार सागरोपम है ॥२९१॥

जैसे-अचक्षुदर्शनी जीवोंकी स्थितिमें विद्यमान एक जीव मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । गर्भको आदि लेकर आठ वर्षके द्वारा उपशमसम्यक्त्व और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानको एक साथ प्राप्त हुआ (१) । अन्तर्मुहूर्तके पश्चात् वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ (२) । पुनः अन्तर्मुहूर्तसे अनन्तानुबन्धीका विसंयोजन किया (३) । पुनः दर्शनमोहनीयको उपशमाकर (४) प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानसम्बन्धी सहस्रों परिवर्तनोंको करके (५) उपशमश्रेणीके योग्य अप्रमत्तसंयत हुआ (६) । पुनः अपूर्वकरण (७) अनिवृत्तिकरण (८) सूक्ष्मसाम्पराय (९) उपाशन्तमोह (१०)

^१ चतुर्णामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । स.सि. १,८.

^२ एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । स.सि. १,८.

^३ उत्कर्षेण द्वे सागरोपमसहस्रे देशोने । स.सि. १,८. ^४ ता. १ प्रतौ उवसमसम्मत्तगणं इति पाठः ।

(८) सुहुमो (९) उवसंतो (१०) सुहुमो (११) अणियट्टी (१२) अपुव्वो (१३) हेड्डा ओदरिय अंतरिदो चक्खुदंसणिट्टिदिं परिभमिय अंतिमे भवे मणुसेसु उववण्णो । कदकरणिज्जो होदूण अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे विसुद्धो अप्पमत्तो जादो । सादासादबंधपरावत्तसहस्सं केउवसमसेडीपाओगअप्पमत्तो होदूण अपुव्वुवसामगो जादो (१४) । लद्धमंतरं । तदो अणियट्टी (१५) सुहुमो (१६) उवसंतो (१७) पुणो वि सुहुमो (१८) अणियट्टी (१९) अपुव्वो (२०) अप्पमत्तो (२१) पमत्तो (२२) अप्पमत्तो (२३) होदूण खवगसेडीमारूढे । उवरि छ अंतोमुहुत्ता । एवमड्ववस्सेहि एगूणतीसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया सगट्टिदी अपुव्वकरणुक्कस्संतरं । एवं चेव तिण्हमुवसामगाणं । णवरि सत्तावीस पंचवीस तेवीस अंतोमुहुत्ता ऊणा कायव्वा ।

चदुण्हं खवगाणमोघं^१ ॥२९२॥

सुगममेदं ।

सूक्ष्मसाम्पराय (११) अनिवृत्तिकरण (१२) और अपूर्वकरणसंयत होकर (१३) तथा नीचे उतरकर अन्तरको प्राप्त हो चक्षुदर्शनीकी स्थितिप्रमाण परिभ्रमणकर अन्तिम भवमें मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । वहांपर कृतकृत्यवेदकसम्यक्त्वी होकर संसारके अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर विशुद्ध हो अप्रमत्तसंयत हुआ । वहांपर साता और असाता वेदनीयके बंध-परावर्तन-सहस्रोंको करके उपशमश्रेणीके योग्य अप्रमत्तसंयत होकर अपूर्वकरण उपशामक हुआ (१४) । इस प्रकार अन्तर प्राप्त हो गया । तत्पश्चात् अनिवृत्तिकरण (१५) सूक्ष्मसाम्पराय (१६) उपशान्तकषाय (१७) पुनरपि सूक्ष्मसाम्पराय (१८) अनिवृत्तिकरण (१९) अपूर्वकरण (२०) अप्रमत्तसंयत (२१) प्रमत्तसंयत (२२) और अप्रमत्तसंयत होकर (२३) क्षपकश्रेणीपर चढा । इनमें ऊपरके छह अन्तर्मुहूर्त और मिलाये । इस प्रकार आठ वर्ष और उनतीस अन्तर्मुहूर्तोंसे कम अपनी स्थिति चक्षुदर्शनी अपूर्वकरण उपशामकका उत्कृष्ट अन्तर है ।

इसी प्रकार चक्षुदर्शनी शेष तीन उपशामकोंका भी अन्तर जानना चाहिए । विशेषता यह है कि अनिवृत्तिकरण उपशामकके सत्ताईस अन्तर्मुहूर्त, सूक्ष्मसाम्पराय उपशामकके पच्चीस अन्तर्मुहूर्त और उपशान्तकषायके तेवीस अन्तर्मुहूर्त कम करना चाहिए ।

चक्षुदर्शनी चारों क्षपकोंका अन्तर ओघके समान है ॥२९२॥

यह सूत्र सुगम है ।

^१ चतुर्णां क्षपकाणां सामान्योक्तम् । स.सि. १,८. मु. प्रतौ खवाणमोघं इति पाठः ।

अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीद-
रागछदुमत्था ओघं^१ ॥२९३॥

कुदो ? ओघादो भेदाभावा ।

ओधिदंसणी ओधिणाणिभंगो^२ ॥२९४॥

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो^३ ॥२९५॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

एवं दंसणमग्गणा समत्ता ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय - णीललेस्सिय- काउलेस्सिएसु
मिच्छादिट्ठि - अंसजदसम्मादिट्ठिणमंतरं केवचिरं कालादो होदि,
णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं^४ ॥२९६॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं^५ ॥२९७॥

अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक
गुणस्थानवर्ती जीवोंका अन्तर ओघके समान है ॥२९६॥

क्योंकि, ओघसे इनके अन्तरमें कोई भेद नहीं है ।

अवधिदर्शनी जीवोंका अन्तर अवधिज्ञानियोंके समान है ॥२९४॥

केवलदर्शनी जीवोंका अन्तर केवलज्ञानियोंके समान है ॥२९५॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं ।

इस प्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोत लेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि
और असंयतसम्यग्दृष्टि जोवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर
नहीं है, निरन्तर है ॥२९६॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२९७॥

^१ अचक्षुदर्शनिषु मिथ्यादृष्ट्यादिक्षीणकषायान्तानां सामान्योक्तमन्तरम् । स.सि. १,८.

^२ अवधिदर्शनिनोऽवधिज्ञानिवत् । स.सि. १,८

^३ केवलदर्शनिनः केवलज्ञानिवत् । स.सि. १,८.

^४ लेश्यानुवादेन कृष्णनीलकापोतलेश्येषु मिथ्यादृष्ट्यसंयतसम्यग्दृष्ट्योर्नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् स.सि. १,८.

^५ एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः स.सि. १,८.

तं जहा-सत्तम-पंचम-पढमपुढविमिच्छादिट्टि - असंजदसम्मादिट्टिणो किण्ह-णील-काउलेस्सिया अण्णगुणं गंतूण थोवकालेण पडिणियत्तिय तं चैव गुणमागदा । लद्धं दोण्हं जहण्णंतरं।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सत्तारस सत्त सागरोवमाणि देसूणाणि^१

॥२९८॥

तं जहा-तिण्णि मिच्छादिट्टिणो किण्ह-णील-काउलेस्सिया सत्तम-पंचम-तदिय-पुढवीसु कमेण उववण्णा । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदा (१) विस्संता (२) विसुद्धा (३) सम्मत्तं पडिवण्णा अंतरिदा अवसाणे मिच्छत्तं गदा । लद्धमंतरं (४) । मदा मणुसेसु उववण्णा । णवरि सत्तमपुढवीणेरइओ तिरिक्खाउअं बंधिय (५) विस्समिय (६) तिरिक्खेसु उववज्जदि त्ति घेत्तव्वं । एवं छ-चदु-चदुअंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीस-सत्तारस-सत्त-सागरोवमाणि किण्ह-णील-काउलेस्सियमिच्छादिट्टिउक्कस्संतरं होदि । एवमसंजदसम्मादिट्टिस्स वि वत्तव्वं । णवरि^२ छ-पंच-पंचअंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीस-सत्तारस -

जैसे-सातवीं पृथिवीके कृष्णलेश्यावाले, पांचवीं पृथिवीके नीललेश्यावाले और प्रथम पृथिवीके कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि नारकी जीव अन्य गुणस्थानको जाकर अल्प कालसे ही लौटकर उसी गुणस्थानको प्राप्त हुए । इस प्रकार दोनों गुणस्थानोंका जघन्य अन्तर लब्ध हुआ ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः कुछ कम तेतीस, सत्तरह और सात सागरोपम है ॥२९७॥

जैसे-कृष्ण, नील और कापोत लेश्यावाले तीन मिथ्यादृष्टि जीव क्रमसे सातवीं, पांचवीं और तीसरी पृथिवीमें उत्पन्न हुए । छहों पर्याप्यियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) सम्यक्त्वको प्राप्त कर अन्तरको प्राप्त हो आयुके अन्तमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुए । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ (४) । पश्चात् मरण कर मनुष्योंमें उत्पन्न हुए । विशेषता यह है कि सातवीं पृथिवीका नारकी तिर्यच आयुको बांध कर (५) विश्राम ले (६) तिर्यचोंमें उत्पन्न होता है, ऐसा अर्थ ग्रहण करना चाहिए । इस प्रकार छह अन्तर्मुहूर्तोसे कम तेतीस सागरोपम कृष्णलेश्याका उत्कृष्ट अन्तर है । चार अन्तर्मुहूर्तोसे कम सत्तरह सागरोपम नीललेश्याका उत्कृष्ट अन्तर है । तथा चार अन्तर्मुहूर्तोसे कम सात सागरोपम कापोतलेश्याका उत्कृष्ट अन्तर होता है । इसी प्रकार असंयत सम्यग्दृष्टिका भी अंतर कहना चाहिए । विशेषता यह है कि कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टिका उत्कृष्ट अन्तर आठ अन्तर्मुहूर्तोसे कम तेतीस सागरोपम, नीललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टिका उत्कृष्ट अन्तर पांच अन्तर्मुहूर्तोसे कम सत्तरह

^१ उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सप्तदशसप्तसागरोपमाणि देशोनानि । स.सि. १,८.

^२ मु. प्रतौ-अट्ट इति पाठः ।

सत्त-सागरोवमाणि उक्कस्संतरं ।

सासणसम्मादिडि-सम्माभिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो
होदि, णाणाजीवं पडुच्च ओघं^१ ॥२९९॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो,
अंतोमुहुत्तं^२ ॥३००॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सत्तारस सत्त सागरोवमाणि देसूणाणि^३
॥३०१॥

तं जहा-तिण्णि मिच्छादिट्ठी जीवा सत्तम-पंचम-तदियपुढवीसु किण्ह-णील-
काउलेस्सिया उववण्णा । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदा (१) विस्संता (२) विसुद्धा (३)
उवसमसम्मत्तं पडिवण्णा (४) सासणं गदा । मिच्छत्तं गंतूणंतरिदा । अंतोमुहुत्तावसेसे

सागरोपम और कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टिका उत्कृष्ट अन्तर पांच अन्तर्मुहूर्तोंसे कम सात
सागरोपम होता है ।

उक्त तीनों अशुभलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर
कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ओघके समान है ॥२९९॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमशः पल्योपमका असंख्यातवां भाग और
अन्तर्मुहूर्त है ॥३००॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागरोपम, सत्तरह
सागरोपम और सात सागरोपम है ॥३०१॥

जैसे-कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले तीन मिथ्यादृष्टि जीव क्रमशः सातवीं, पांचवीं और
तीसरी पृथिवीमें उत्पन्न हुए । छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३)
उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुए (४) । पुनः सासादनगुणस्थानको गये । पश्चात् मिथ्यात्वको जाकर
अन्तरको प्राप्त हुए । पुनः जीवनके अन्तर्मुहूर्त

^१ सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्ट्योर्नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । स.सि. १,८. ^२ एकजीवं प्रति जघन्येन
पल्योपमासंख्येयभागोऽन्तर्मुहूर्तश्च । स.सि. १,८. ^३ उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सप्तदशसप्तसागरोपमाणि
देशोनानि । स.सि. १,८.

जीवीए उवसमसम्मत्तं पडिवण्णा । सासणं गंतूण बिदियसमए मदा मणुसेसु उववण्णा । णवरि सत्तमपुढवीए सासणा मिच्छत्तं गंतूण (५) तिरिक्खेसुववज्जंति त्ति वत्तव्वं । एवं पंच-चदु-चदुअंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीस-सत्तारस-सत्त सागरोवमाणि किण्ह-णील-काउलेस्सियसासणमुक्कस्संतरं होदि । एगसमओ अंतोमुहुत्तब्भंतरे पविट्ठो त्ति पुध ण उत्तो । एवं सम्मामिच्छदिट्ठिस्स वि । णवरि छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीस-सत्तारस-सत्तसागरोवमाणि किण्ह-णील काउलेस्सियसम्मामिच्छादिट्ठिउक्कस्संतरं ।

ते उलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिठअसंजद-सम्मदिट्ठीणभंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं^१ ॥३०२॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं^२ ॥३०३॥

तं जहा-चत्तारि जीवा मिच्छादिट्ठि-सम्मदिट्ठिणो तेउ-पम्मलेस्सिया अण्णगुणं

अवशिष्ट रहनेपर उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुए । पश्चात् सासादनगुणस्थानमें जाकर द्वितीय समयमें मरे और मनुष्योंमें उत्पन्न हुए । विशेषता यह है कि सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि नारकी मिथ्यात्वको प्राप्त होकर (५) तिर्यचोंमें उत्पन्न होते हैं, ऐसा कहना चाहिए । इस प्रकार पांच, चार और चार अन्तर्मुहूर्तोंसे कम क्रमशः तेतीस, सत्तरह और सात सागरोपम कालप्रमाण कृष्ण, नील और कापोत लेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका उत्कृष्ट अन्तर होता है । सासादनगुणस्थानमें जाकर रहनेका एक समय अन्तर्मुहूर्तके ही भीतर प्रविष्ट है, इसलिए पृथक् नहीं कहा । इसी प्रकार तीनों अशुभलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका भी उत्कृष्ट अन्तर जानना चाहिए । विशेषता यह है कि यहांपर छह-छह अन्तर्मुहूर्तोंसे कम तेतीस, सत्तरह और सात सागरोपमकाल क्रमशः कृष्ण, नील और कापोत लेश्यावालोंका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३०२॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३०३॥

जैसे-तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि चार जीव

^१ तेजःपद्मलेश्ययोर्मिथ्यादृष्ट्यसंयतसम्यग्दृष्ट्योर्नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । स.सि. १,८

^२ एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । स.सि. १,८

गंतूण सव्वजहण्णकालेण पडिणियत्तिय तं चेव गुणमागदा । लद्धमंतरं ।

उक्कस्सेण बे अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि^१ ॥३०४॥

तं जहा-बे मिच्छादिट्ठिणो तेउ-पम्मलेस्सिया सादिरेय-बे-अट्ठारससागरोवमाउड्ढिएसु देवेसु उववण्णा । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदा (१) विस्संता (२) विसुद्धा (३) सम्मत्तं घेत्तूणंतरिदा । सगड्ढिदिं जीविय अवसाणे मिच्छत्तं गदा (४) । लद्धं सादिरेय-बे-अट्ठारससागरोवममेत्तंतरं । एवं सम्मादिट्ठिस्स वि । णवरि पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणियाओ सगड्ढिदीओ अंतरं ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं के वचिरं कालादो होदि,णाणाजीवं पडुच्च ओघं^२ ॥ ३०५॥

सुगममेदं ।

.....
अन्य गुणस्थानको जाकर सर्वजघन्य कालसे लौटकर उसी ही गुणस्थानको आगये । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर साधिक दो सागरोपम और साधिक अट्ठारह सागरोपम है ॥३०४॥

जैसे-तेज और पद्म लेश्यावाले दो मिथ्यादृष्टि जीव साधिक दो सागरोपम और साधिक अट्ठारह सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुए । छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) और सम्यक्त्वको ग्रहण कर अन्तरको प्राप्त हुए । पुनः अपनी स्थितिप्रमाण जीवित रहकर आयुके अन्तमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुए (४) । इस प्रकार साधिक दो सागरोपमकाल तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टिका और साधिक अट्ठारह सागरोपमकाल पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टिका उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हो गया । इसी प्रकार तेज और पद्म लेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवका भी अन्तर कहना चाहिए । विशेषता यह है कि पांच अन्तर्मुहूर्तोंसे कम अपनी अपनी स्थितिप्रमाण अन्तर होता है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ओघके समान है ॥ ३०५॥

यह सूत्र सुगम है ।

^१ उत्कर्षेण द्वे सागरोपमे अष्टादश च सागरोपमाणि सातिरेकाणि । स.सि. १,८.

^२ सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्ट्योर्नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । स.सि. १,८

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो,

अंतोमुहुत्तं^१ ॥३०६॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण बे अट्टारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि^२ ॥३०७॥

तं जहा-बे सासणा तेउ-पम्मलेस्सिया सादिरेय -बे- अट्टारससागरोवमाउट्टिदिस्सु देवेसु उववण्णा । एगसमयमच्छिय बिदियसमए मिच्छत्तं गंतूणंतरिदा । अवसाणे बे वि उवसमसम्मत्तं पडिवण्णा । पुण्णे सासणं गंतूण बिदियसमए मदा । एवं सादिरेय-बे-अट्टारससागरोवमाणि दुसमऊणाणि सासणुक्कस्संतरं होदि । एवं सम्माभिच्छादिट्टिस्स वि । णवरि छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणियाओ उत्तट्टिदीओ अंतरं ।

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो

होदि, णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं णिरंतरं^३ ॥३०८॥

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमशः पल्योपमका असंख्यातवां भाग

और अन्तर्मुहूर्त है ॥३०६॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः साधिक दो सागरोपम और

अट्टारह सागरोपम है ॥३०७॥

जैसे-तेज और पद्म लेश्यावाले दो सासादनसम्यग्दृष्टि जीव साधिक दो सागरोपम और साधिक अट्टारह सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुए । वहां एक समय रहकर दूसरे समयमें मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुए । आयुके अन्तमें दोनों ही उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुए । पश्चात् सासादनगुणस्थानको जाकर दूसरे समयमें मरे । इस प्रकार दो समय कम साधिक दो सागरोपम और साधिक अट्टारह सागरोपम उक्त दोनों लेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर होता है । इसी प्रकार उक्त दोनों लेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका भी अन्तर जानना चाहिए । विशेषता यह है कि इनके छह अन्तर्मुहूर्तोंसे कम अपनी उक्त स्थितियोंप्रमाण अन्तर होता है ।

तेज और पद्म लेश्यावाले संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना और एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३०८॥

^१ एकजीवं प्रति जघन्येन पल्योपमासंख्येयभागोऽन्तर्मुहूर्तश्च । स.सि. १,८.

^२ उत्कर्षेण द्वे सागरोपमे अष्टादश च सागरोपमाणि सातिरेकाणि । स.सि. १,८.

^३ संयतासंयतप्रमत्ताप्रमत्तसंयतानां नानाजीवापेक्षया एकजीवापेक्षया च नास्यन्तरम् । स.सि. १,८.

कुदो? णाणाजीवपवाहवोच्छेदाभावा । एगजीवस्स वि, लेस्सद्वादो गुणद्वाए बहुत्तुवदेसा ।

**सुकलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं
केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं^१ ॥३०९॥**

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं^२ ॥३१०॥

तं जहा- बे देवा मिच्छादिट्ठि-सम्मादिट्ठिणो सुकलेस्सिया गुणंतरं गंतूण जहण्णेण कालेण अप्पिदगुणं पडिवण्णा । लद्धमंतोमुहुत्तमंतरं ।

उक्कस्सेण एकत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि^३ ॥३११॥

तं जहा-बे जीवा सुकलेस्सिया मिच्छादिट्ठी दव्वलिंगिणो एकत्तीससागरोवमिएसु देवेषु उववण्णा । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदा (१) विस्संता^४ (२) विसुद्धा (३) सम्मत्तं पडिवण्णा । तत्थेगो मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो (४) अवरो सम्मत्तेणेव । अवसाणे

क्योंकि, उक्त गुणस्थानवाले नाना जीवोंके प्रवाहका कभी विच्छेद नहीं होता है । तथा एक जीवकी अपेक्षा भी अन्तर नहीं है, क्योंकि, लेश्याके कालसे गुणस्थानका काल बहुत होता है ऐसा उपदेश पाया जाता है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं, है, निरन्तर है ॥३०९॥

यह सूत्र सुगम है

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३१०॥

जैसे-शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि दो देव अन्य गुणस्थानको जाकर जघन्य कालसे विवक्षित गुणस्थानको प्राप्त हुए । इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त कालप्रमाण अन्तर लब्ध हो गया ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम इकत्तीस सागरोपम है ॥३११॥

जैसे-शुक्ललेश्यावाले दो मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी जीव इकत्तीस सागरोपमकी स्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुए । छहाँ पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) सम्यक्त्वको प्राप्त हुए । उनमेंसे एक मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको

^१ शुक्ललेश्येषु मिथ्यादृष्ट्यसंयतसम्यग्दृष्ट्योर्नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । स.सि. १,८.

^२ एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । स.सि. १,८.

^३ उत्कर्षेणैकत्रिंशत्सागरोपमाणि देशोनानि । स.सि. १,८. ता. १ प्रतौ देसूणाणि इति पाठो नास्ति ।

^४ ता. २ प्रतौ विस्संतो विसुद्धो इति पाठः ।

जहाकमेण बे वि जणा मिच्छत्त^१ सम्मत्ताणि पडिवण्णा (५) । चदु-पंचअंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि एकत्तीसं सागरोवमाणि मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमुक्कस्संतरं ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च ओघं^२ ॥३१२॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं^३ ॥३१३॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण एकत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि^४ ॥३१४॥

एदं पि सुगमं ।

प्राप्त हुआ (४) । दूसरा जीव सम्यक्त्वके साथ ही रहा । आयुके अन्तमें यथाक्रमसे दोनों ही जीव मिथ्यात्व और सम्यक्त्वको प्राप्त हुए (५) । इस प्रकार चार अन्तर्मुहूर्तोंसे कम इकत्तीस सागरोपमकाल शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टिका उत्कृष्ट अन्तर है और पांच अन्तर्मुहूर्तोंसे कम इकत्तीस सागरोपमकाल असंयतसम्यग्दृष्टिका उत्कृष्ट अन्तर है ।

शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ओघके समान है ॥३१२॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमशः पल्योपमका असंख्यातवां भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥३१३॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम इकत्तीस सागरोपम है ॥३१४॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

^१ ता. मु. प्रतौ, वि मिच्छत्त इति पाठः।

^२ सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्ट्योर्नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । स.सि. १,८.

^३ एकजीवं प्रति जघन्येन पल्योपमासंख्येयभागोऽन्तर्मुहूर्तश्च । स.सि. १,८.

^४ उत्कर्षेणैकत्रिंशत्सागरोपमाणि देशोनानि । स.सि. १,८.

संजदासंजद-पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि,
णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं^१ ॥३१५॥

कुदो णाणाजीवपवाहस्स वोच्छेदाभावा, एगजीवस्स लेस्सध्दादो गुणध्दाए बहुत्तुवदेसादो ।
अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं
पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं^२ ॥३१६॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं^३ ॥३१७॥

तं जहा-एक्को अप्पमत्तो सुक्कलेस्साए अच्छिदो उवसमसेढिं चडिदूणंतरिय
सव्वजहण्णकालेण पडिणियत्तिय अप्पमत्तो जादो । लद्धमंतरं ।

उक्कस्समंतोमुहुत्तं^४ ॥३१८॥

शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत और प्रमत्तसंयतोंका अन्तर कितने काल तक होता है ?
नाना और एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३१५॥

क्योंकि, उक्त गुणस्थानवर्ती नाना जीवोंके प्रवाहका कभी व्युच्छेद नहीं होता है । तथा एक
जीवकी अपेक्षा भी अन्तर नहीं है, क्योंकि, लेश्याके कालसे गुणस्थानका काल बहुत होता है ऐसा
उपदेश पाया जाता है।

शुक्ललेश्यावाले अप्रमत्तसंयतोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी
अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३१६॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३१७॥

जैसे-शुक्ललेश्यामें विद्यमान कोई एक अप्रमत्तसंयत उपशमश्रेणीपर चढकर अन्तरको प्राप्त
हो सर्वजघन्य कालसे लौटकर अप्रमत्तसंयत हुआ । इस प्रकार अन्तर प्राप्त होगया ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३१८॥

^१ संयतासंयतप्रमत्तसंयतयोस्तेजोलेश्यावत् । स.सि. १,८.

^२ अप्रमत्तसंयतस्य नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । स.सि. १,८.

^३ मु. प्रतौ पडिदूणंतरिय इति पाठः ।

^४ एकजीवं प्रति जघन्यमुत्कृष्टं चान्तर्मुहूर्तः । स.सि. १,८.

एदस्स जहण्णभंगो । णवरि सव्वचिरेण कालेण उवसमसेढीदो ओदिण्णस्स वत्तव्वं ।
तिण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं

पडुच्च जहण्णेण एगसमयं^१ ॥३१९॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥३२०॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं^२ ॥३२१॥

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं^२ ॥३२२॥

एदेसिं दोण्हं सुत्ताणमत्थे भण्णमाणे खिप्प-चिरकालेहि उवसमसेढिं चडिय ओदिण्णाणं^३

जहण्णुक्कस्सकाला वत्तव्वा ।

इसका अन्तर भी जघन्य अन्तरप्ररूपणाके समान है । विशेषता यह है कि सर्वदीर्घकालात्मक अन्तर्मुहूर्त द्वारा उपशमक्षणीसे उतरे हुए जीवके उत्कृष्ट अन्तर कहना चाहिए ।

शुक्ललेश्यावाले अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती तीनों उपशामक जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥३१९॥

यह सूत्र सुगम है ।

शुक्ललेश्यावाले तीनों उपशामकोंका उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥३२०॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३२१॥

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३२२॥

इन दोनों सूत्रोंका अर्थ कहने पर क्षिप्र (लघु) कालसे उपशमश्रेणी पर चढकर उतरे हुए जीवोंके जघन्य अन्तर कहना चाहिए, तथा चिर (दीर्घ) कालसे उपशमश्रेणी पर चढकर उतरे हुए जीवोंके उत्कृष्ट अन्तर कहना चाहिए ।

^१ त्रयाणामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । स.सि. १,८.

^२ एकजीव प्रति जघन्यमुत्कृष्टं चान्तर्मुहूर्तः । स.सि. १,८.

^३ प्रतिषु 'ओधिणाणं' इति पाठः ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि,
णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं^१ ॥३२३॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ ३२४ ॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं^२ ॥३२५॥

उवसंतादो उवरि उवसंतकसाएण पडिवज्जमाणगुणट्टाणाभावा, हेट्टा ओदिण्णस्स वि
लेस्संतरं^३संकंतिमंतरेण पुणो उवसंतगुणग्गहणाभावा ।

चदुण्हं खवगा ओघं^४ ॥३२६॥

शुक्ललेश्यावाले उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंका अन्तर कितने काल तक
होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥३२३॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥३२४॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३२५॥

क्योंकि, उपशान्तकषाय गुणस्थानसे ऊपर उपशान्तकषायी जीवके द्वारा प्रतिपद्यमान
गुणस्थानका अभाव है, तथा नीचे उतरे हुए जीवके भी अन्य लेश्याके संक्रमणके विना पुनः
उपशान्तकषाय गुणस्थानका ग्रहण हो नहीं सकता है ।

विशेषार्थ - उपशान्तकषायगुणस्थानके अन्तरका अभाव बतानेका कारण यह है कि
ग्यारहवें गुणस्थानसे ऊपर तो वह चढ नहीं सकता है, क्योंकि, वहांपर क्षपकोंका ही गमन होता है।
और यदि नीचे उतरकर पुनः उपशमश्रेणीपर चढे, तो नीचेके गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्यासे पीत
पद्मादि लेश्याका परिवर्तन हो जायगा, क्योंकि, वहांपर एक लेश्याके कालसे गुणस्थानका काल
बहुत बताया गया है ।

शुक्ललेश्यावाले चारों क्षपकोंका अन्तर ओघके समान है ॥३२६॥

^१ उपशान्तकषायस्य नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । स.सि. १,८.

^२ एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम् । स.सि. १,८.

^३ प्रतिषु 'लेस्संतरं' इति पाठः ।

^४ चतुर्णां क्षपकाणां सयोगकेवलनामलेश्यानां च सामान्यवत् । स.सि. १,८.

सजोगिकेवली ओघं ॥३२७॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

एवं लेस्सामग्गणा^१ समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव
अजोगिकेवलि त्ति ओघं^२ ॥३२८॥

कुदो? सव्वपयारेण ओघपरूवणादो भेदाभावा ।

अभवसिद्धियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च
णत्थि अंतरं, णिरंतरं^३ ॥३२९॥

कुदो? अभव्वपवाहवोच्छेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥३३०॥

कुदो? गुणंतरसंकंतीए तत्थाभावा ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

शुक्ललेश्यावाले सयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ॥३२७॥

ये दोनों सूत्र सुगम हैं ।

इस प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिकोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली तक प्रत्येक
गुणस्थानवर्ती भव्य जीवोंका अन्तर ओघके समान है ॥३२८॥

क्योंकि, सर्व प्रकार ओघप्ररूपणासे भव्यमार्गणाकी अन्तरप्ररूपणामें कोई भेद नहीं होता है ।

अभव्यसिद्धिक जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर
नहीं है, निरन्तर है ॥३२९॥

क्योंकि, अभव्य जीवोंके प्रवाहका कभी विच्छेद नहीं होता है ।

अभव्य जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३३०॥

क्योंकि, अभव्योंमें अन्य गुणस्थानके परिवर्तनका अभाव है ।

इस प्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

^१ प्रतिषु 'लेस्समग्गणा' इति पाठः ।

^२ भव्यानुवादेन भव्येषु मिथ्यादृष्ट्याद्ययोगकेवत्यन्तानां सामान्यवत् । स.सि. १,८.

^३ अभव्यानां नानाजीवापेक्षया एकजीवापेक्षया च नास्त्यन्तरम् । स.सि. १,८.

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिष्टिसु असंजदसम्मादिष्टिणमंतरं केवचिरं
कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥३३१॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥३३२॥

तं जहा-एगो असंजदसम्मादिष्टी संजमासंजमगुणं गंतूण सव्वजहण्णेण कालेण पुणो
असंजदसम्मादिष्टी जादो । अंतरं ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणं ॥३३३॥

तं जहा-एगो मिच्छादिष्टी अट्ठावीससंतकम्मिओ पंचिंदियतिरिक्खसण्णिणसम्मूर्च्छिमपञ्जत्तएसु
उववण्णो । छहि पञ्जत्तीहि पञ्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पड्विण्णो (४) ।
संजमासंजमगुणं गंतूणंतरिदो पुव्वकोडिं जीविय मदो देवो जादो । एवं चदुहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया
पुव्वकोडी उक्कस्संतरं ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था
ओधि-णाणिभंगो ॥३३४॥

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अन्तर कितने काल
तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३३१॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३३२॥

जैसे-एक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव संयमासंयम गुणस्थानको प्राप्त होकर सर्वजघन्य कालसे
पुनः असंयतसम्यग्दृष्टि होगया । इस प्रकार अन्तर प्राप्त हुआ ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्वकोटी है ॥३३३॥

जैसे- मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक मिथ्यादृष्टि जीव पंचेन्द्रिय संज्ञी
सम्मूर्च्छिम पर्याप्तक तिर्यचोंमें उत्पन्न हुआ । छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२)
विशुद्ध हो (३) वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ (४) । पुनः संयमासंयम गुणस्थानको जाकर अन्तरको
प्राप्त हो पूर्वकोटी वर्षतक जीवित रह कर मरा और देव हुआ । इस प्रकार चार अन्तर्मुहूर्तोंसे कम
पूर्वकोटी वर्ष असंयतसम्यग्दृष्टिका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक
गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टियोंका अन्तर अवधिज्ञानियोंके समान है ॥३३४॥

जधा ओधिणाणमग्गणाए संजदासंजदादीणमंतरपरुवणा कदा, तधा कादव्वा, णत्थि एत्थ, कोइ विसेसो ।

चदुण्हं खवगा अजोगिकेवली ओघं ॥३३५॥

सजोगिकेवली ओघं ॥३३६॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

खइयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं^१ ॥३३७॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं^२ ॥३३८॥

तं जहा-एक्को असंजदसम्मादिट्ठी अण्णगुणं गंतूण सव्वजहण्णकालेण असंजदसम्मादिट्ठी जादो । लद्धमंतरं ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणं^३ ॥३३९॥

जिस प्रकारसे अवधिज्ञानमार्गणामें संयतासंयत आदिकोंके अन्तरकी प्ररूपणा की है, उसी प्रकार यहां पर भी करनी चाहिए, क्योंकि, उससे यहां पर कोई विशेषता नहीं है ।

सम्यग्दृष्टि चारों क्षपक और अयोगिकेवलियोंका अन्तर ओघके समान है ॥३३५॥

सम्यग्दृष्टि सयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ॥३३६॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३३७॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३३८॥

जैसे-एक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव अन्य (संयतासंयतादि) गुणस्थानको जाकर सर्वजघन्य कालसे पुनः असंयतसम्यग्दृष्टि होगया । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्वकोटी वर्ष है ॥३३९॥

^१ सम्यक्त्वानुवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टिष्वसंयतसम्यग्दृष्टेर्नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । स.सि. १,८.

^२ एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । स.सि. १,८.

^३ उत्कर्षेण पूर्वकोटी देशोना । स.सि. १,८.

तं जहा-एक्को पुव्वकोडाउएसुमणुसेसुववाञ्जिय गब्भादिअड्डवस्सिओ जादो ।
दंसणमोहणीयं खविय खड्यसम्मादिट्टी जादो (१) । अंतोमुहुत्तमच्छिदूण (२) संजमासंजमं
संजमं वा पडिवञ्जिय पुव्वकोडिं गमिय कालं गदो देवो जादो । अड्डवस्सेहि बे अंतोमुहुत्तेहि^१
य ऊणिया पुव्वकोडी अंतरं ।

संजदासंजद-पमत्तसंजद-अप्पमत्तसंजदाणमंतरं^२ केवचिरं
कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं^३ ॥३४०॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं^४ ॥३४१॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सातिरेयाणि^५ ॥३४२॥

तं जहा-एक्को पुव्वकोडाउगेसु मणुसेसु उववण्णो । गब्भादिअड्डवस्साणमुवरि
अंतोमुहुत्तेण (१) खड्यं पडुविय^६ (२) विस्समिय (३) संजमासंजमं पडिवञ्जिय (४)

जैसे-एक जीव पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न होकर गर्भसे लेकर आठ
वर्षका हुआ और दर्शनमोहनीयका क्षय करके क्षायिकसम्यग्दृष्टि होगया (१) । वहां अन्तर्मुहूर्त
रह करके (२) संयमासंयम या संयमको प्राप्त होकर और पूर्वकोटी वर्ष बिताकार मरणको प्राप्त
हो देव हुआ । इस प्रकार आठ वर्ष और दो अन्तर्मुहूर्तोसे कम पूर्वकोटी वर्ष असंयत
क्षायिकसम्यग्दृष्टिका उत्कृष्ट अन्तर है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत और प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीवोंका अन्तर
कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३४०॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३४१॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर साधिक तेत्तीस सागरोपम है ॥३४२॥

जैसे-एक जीव पूर्वकोटी वर्षकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । गर्भको आदि
लेकर आठ वर्षोंके पश्चात् अन्तर्मुहूर्तसे (१) क्षायिकसम्यक्त्वको प्रस्थापनकर (२)

^१ मु. प्रतौ विअंतोमुहुत्तेहि इति पाठः । ^२ मु. प्रतौ प्रमत्तसंजदाणमंतरं इति पाठः ।

^३ संयतासंयतप्रमत्ताप्रमत्तसंयतानां नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । स.सि. १,८.

^४ एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । स.सि. १,८.

^५ उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि सातिरेकाणि । स.सि. १,८. ^६ प्रतिषु 'पडुवियं' इति पाठः ।

संजमं पडिवण्णो । पुव्वकोडिं गमिय मदो समऊणतेत्तीससागरोवमाउड्ढिदिएसु देवेसु उववण्णो ।^१
तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसुववण्णो । थोवावसेसे जीविए संजमासंजमं गदो (५) । तदो
अप्पमत्तादिणवहि अंतोमुहुत्तेहि सिद्धो जादो । अड्डवस्सेहि चोद्धसअंतोमुहुत्तेहि य
ऊणदोपुव्वकोडीहिं सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्संतरं संजदासंजदस्स ।

पमत्तस्स उच्चदे-एक्को पमत्तो अप्पमत्तो (१) अपुव्वो (२) अणियट्ठी (३) सुहुमो (४)
उवसंतो (५) पुणो वि सुहुमो (६) अणियट्ठी (७) अपुव्वो (८) अप्पमत्तो (९) अद्धाखण कालं
गदो । समऊणतेत्तीससागरोवमाउड्ढिदिएसु देवेसु उववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु
उववण्णो । अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए पमत्तो जादो । लद्धमंतरं (१) । तदो अप्पमत्तो (२) ।
उवरि छ अंतोमुहुत्ता । अंतररस्स बाहिरा अड्ड अंतोमुहुत्ता, अंतरस्स अब्भंतरिमा वि णव,
तेणेगंतो- मुहुत्तब्भहियपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्संतरं ।

विश्राम ले (३) संयमासंयमको प्राप्तकर (४) संयमको प्राप्त हुआ । संयमसहित पपूर्वकोटीकाल
बिताकार मरा और एक समय कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ ।
वहांसे च्युत हो पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । जीवनके अल्प अवशेष रह जाने पर
संयमासंयमको प्राप्त हुआ (५) । इसके पश्चात् अप्रमत्तादि गुणस्थानसम्बन्धी नौ अन्तर्मुहूर्तोंसे
सिद्ध होगया । इस प्रकार आठ वर्ष और चौदह अन्तर्मुहूर्तोंसे कम दो पूर्वकोटियोंसे साधिक तेतीस
सागरोपमकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं-एक क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत
जीव अप्रमत्तसंयत (१) अपूर्वकरण (२) अनिवृत्तिकरण (३) सूक्ष्मसाम्पराय (४) लपशान्तकषाय
(५) पुनः सूक्ष्मसाम्पराय (६) अनिकृत्तिकण (७) अपूर्वकरण (८) अप्रमत्तसंयत (९) होकर
गुणस्थान और आयुके कालक्षयसे मरणको प्राप्त हो एक समय कम तेतीस सागरोपमकी
आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ । पुनः वहांसे च्युत होकर पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें
उत्पन्न हुआ । वहां जीवनके अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर प्रमत्तसंयत हुआ । इस प्रकार अन्तर
लब्ध होगया । (१) । पश्चात् अप्रमत्तसंयत हुआ (२) । इनमें ऊपरके छह अन्तर्मुहूर्त और मिलाए
। अन्तरके बाहरी आठ अन्तर्मुहूर्त हैं और अन्तरके भीतरी नौ अन्तर्मुहूर्त हैं, इसलिए नौमेंसे आठके
घटा देने पर शेष बचे हुए एक अन्तर्मुहूर्तसे अधिक पूर्वकोटीसे साधिक तेतीस सागरोपम
क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

^१ मु. प्रतौ-द्विदिएसु उववण्णो इति पाठ : ।

अधवा अंतरस्सभंतराओ दो अप्पमत्तद्धाओ, तासिं बाहिरिया एक्का पमत्तद्धा सुद्धा । अंतरभंतराओ छ उवसामगद्धाओ, तासिं बाहिरियाओ तिण्णि खवगद्धाओ सुद्धाओ । अंतरभंतरिमाए उवसंतद्धाए एक्किक्किस्से खवगद्धाए अद्धं^१ सुद्धं । अवसेसा अद्धुद्धा अंतोमुहुत्ता । तेहि ऊणियाए पुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि पमत्तरस्सुक्करसंतरं ।

अप्पमत्तस्स उच्चदे-एक्को अप्पमत्तो खड्यसम्मादिट्टी अपुव्वो (१) अणियट्टी (२) सुहुमो (३) उवसंतो (४) पुणो वि सुहुमो (५) अणियट्टी (६) अपुव्वो होदूण (७) कालं गदो समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्टिदिएसु देवेसुववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो, अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अप्पमत्तो जादो । लद्धमंतरं (१) । तदो पमत्तो (२) पुणो अप्पमत्तो (३) । उवरि छ अंतोमुहुत्ता । अंतरस्स अब्भंतरिमाओ छ उवसामगद्धाओ बाहिरिल्लियासु तिसु खवगद्धासु सुद्धाओ । अंतरभंतरिमाए^२ उवसंतद्धाए खवगद्धाए

अथवा, अन्तरके आभ्यन्तरी दो अप्रमत्तकाल हैं और उनके बाहरी एक प्रमत्तकाल शुद्ध है । (अतएव घटाने पर शून्य शेष रहा, क्योंकि, अप्रमत्तसंयतके कालसे प्रमत्तसंयतका काल दूना होता है ।) तथा अन्तरके भीतरी छह उपशामककाल हैं, और उनके बाहरी तीन क्षपककाल शुद्ध हैं । (अतएव घटा देने पर शेष कुछ नहीं रहा, क्योंकि, उपशामश्रेणीके कालसे क्षपकश्रेणीका काल दुगुना होता है ।) अन्तरके भीतरी उपशामककालमेंसे एक एक क्षपककालके आधा घटाने पर क्षपककालका आधा शेष रहता है । इस प्रकार सब मिलाकर साढे तीन अन्तर्मुहूर्त अवशेष रहे । उन साढे तीन अन्तर्मुहूर्तोंसे कम पूर्वकोटीसे साधिक तेतीस सागरोपमकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं-एक अप्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव अपूर्वकरण (१) अनिवृत्तिकरण (२) सूक्ष्मसाम्पराय (३) उपशान्तकषाय (४) होकर पुनरपि सूक्ष्मसाम्पराय (५) अनिवृत्तिकरण (६) अपूर्वकरण (७) होकर मरणको प्राप्त हुआ और एक समय कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहांसे च्युत हो पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और संसारके अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर अप्रमत्तसंयत हुआ । इस प्रकार अन्तर लब्ध हो गया (१) । पश्चात् प्रमत्तसंयत (२) पुनः अप्रमत्तसंयत (३) हुआ । इनमें ऊपरके छह अन्तर्मुहूर्त और मिलाये । अन्तरके आभ्यन्तरी छह उपशामककाल हैं और बाहरी तीन क्षपककाल हैं, अतएव घटा देने पर शेष कुछ नहीं रहा ।

^१ ता. १- मु.प्रत्योः ' लद्धं' इति पाठः ।

^२ मु. -प्रतौ अब्भंतरिमाए इति पाठः ।

अद्धं सुद्धं । अवसेसा अद्धच्छट्ठंअंतोमुहुत्ता^१ । एदेहि ऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अप्पमत्तुक्कस्संतरं ।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं

पडुच्च जहण्णेण एगसमयं^२ ॥३४३॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥३४४॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं^३ ॥३४५॥

एदं पि अवगदत्थं ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि^४ ॥३४६॥

तं जहा-एक्को पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो । अट्टवस्सेहि अंतोमुहुत्तम्भहिएहि (१) अप्पमत्तो जादो (२) । पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण तम्हि चेव खइयं पडुविय (३)

अन्तरके भीतरी उपशान्तकालमेंसे क्षपककालका आधा घटाने पर आधा काल शेष रहा । अवशिष्ट साढे पांच अन्तर्मुहूर्त रहे । उनसे कम पूर्वकोटीसे साधिक तेतीस सागरोपमकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों उपशामकोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर होता है ॥३४३॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंमें उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥३४४॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३४५॥

इस सूत्रका भी अर्थ ज्ञात है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर साधिक तेतीस सागरोपम है ॥३४६॥

जैसे-एक जीव पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । आठ वर्ष व अन्तर्मुहूर्त (१) के बाद अप्रमत्तसंयत हुआ (२) । पुनः प्रमत्त और अप्रमत्तसंयत-संबंधी सहस्रों परिवर्तनोंको करके उसी कालमें क्षायिकसम्यक्त्वको भी प्रस्थापनकर (३)

^१ मु. प्रतौ एअद्धच्छट्ठंअंतोमुहुत्ता इति पाठ : ।

^२ चतुर्णामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । स.सि. १,८.

^३ एकजीवं प्रति त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि सातिरेकाणि । स.सि. १,८.

^४ उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि सातिरेकाणि । स.सि. १,८.